दो हज़ार साल पुरानी यूनानी दवा मिली

ईसा पूर्व 130 में दवाइयों और सिरियाई कांच के बर्तनों से लदा एक जहाज़ इटली के टस्केनी नामक स्थान के निकट डूब गया था। पुरावेत्ताओं ने इसका मलबा 20 वर्ष पहले खोज निकाला था। और अब पुरा-वनस्पति शास्त्रियों ने इस जहाज़ पर पाई गई दवा की गोलियों का विश्लेषण करने में सफलता प्राप्त की है। ये गोलियां प्राचीन यूनान के चिकित्सकों द्वारा बनाई गई थीं और यह पहली बार है कि इतनी पुरानी औषधियों को जांचा-परखा गया है।

इन गोलियों की जांच के लिए स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट के राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के वैज्ञानिकों ने डीएनए विश्लेषण का सहारा लिया है। इस विश्लेषण से पता चला है कि हर गोली 10 से ज़्यादा पौधों के सत का मिश्रण है। दिलचस्प बात यह है कि गोलियों के इन डिब्बों में अधिकांश दवाइयां सूखी अवस्था में मिली थीं।

स्मिथसोनियन प्राणि वैज्ञानिक उद्यान के रॉबर्ट फ्लाइशर ने दो गोलियों में पाए गए डीएनए खंडों का विश्लेषण किया और इनकी तुलना जेनबैंक जिनेटिक डैटाबेस में उपलब्ध डीएनए सूचना से की। यह जिनेटिक डैटाबेस यू.एस. राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान में है। इस तुलना से पता चला कि गोलियों में गाजर, मूली, सेलेरी, जंगली प्याज़, ओक, पत्ता गोभी, अल्फाअल्फा और यैरो के सत का उपयोग हुआ है। फ्लाइशर को इनमें गुड़हल की उपस्थिति भी दिखी है, जो संभवतः भारत या इथियोपिया से आयात किया गया होगा।

उपरोक्त लगभग सभी पौधों का ज़िक्र प्राचीन यूनानी चिकित्सा ग्रंथों में मिलता है। यह पहली बार है कि इन बातों का भौतिक सत्यापन हुआ है। एक रोचक मामला सूरजमुखी के उपयोग का है। फ्लाइशर का मत है कि गोलियों में सूरजमुखी के उपयोग के प्रमाण मिलते हैं। मगर मान्यता यह है कि उस समय वहां सूरजमुखी पैदा नहीं होता था। यह भी माना जाता है कि उन इलाकों में सूरजमुखी 1400 ईस्वी के बाद ही पहुंचा था। मगर यदि इन गोलियों में सूरजमुखी की उपस्थिति प्रमाणित होती है तो वनस्पति शास्त्रियों को इस पौधे के भौगोलिक वितरण व विसरण के बारे में पुनर्विचार करना होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***